अब खामखाँ चिंता मत करो ....



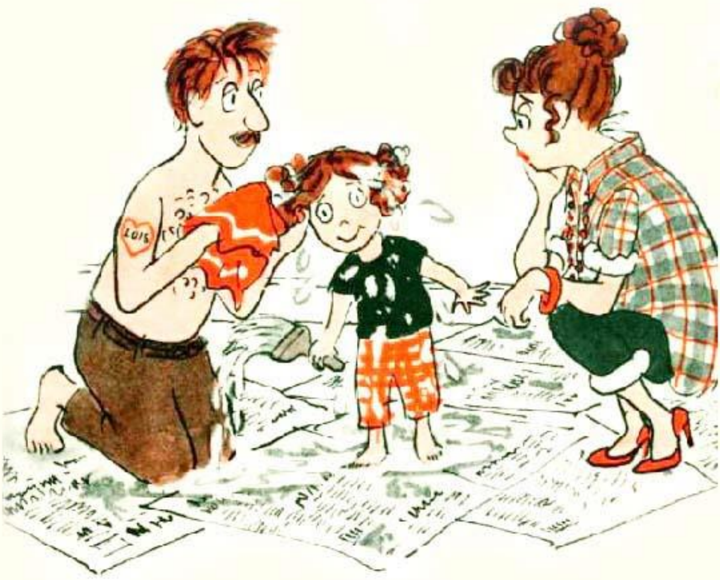
हिंदी अनुवाद: छाया



मेरे पापा मेरे कमरे की पुताई कर रहे थे। उनके पास चिपचिपे पेंट का एक बड़ा-सा डिब्बा था। उन्होंने मुझे उस पेंट को एक लकड़ी की सहायता से मिलाने की इज़ाज़त दे दी।



इस पूरे पेंट को दीवार पर फैलाने और उछालने में बड़ा ही मज़ा आ रहा था। तभी मम्मी ने आकर कहा, “ओह हो, ज़रा अपनी तरफ़ तो देखो! सिर से लेकर पैर तक पेंट ही पेंट।”



पापा ने कहा, “कोई बात नहीं प्रिय, वह ऐसे ही सीखती है। अब खामखाँ चिंता मत करो।”

एक दिन जब हमने खाना खाया, मैं जूस को खुद से ही गिलास में डालना चाहती थी लेकिन जग बहुत ही भारी था जिससे जूस चारों ओर छलक गया। मैंने जूस को कुछ ज़्यादा ही उड़ेल दिया जिससे मेज़पोश पर नारंगी रंग की एक पोखर जैसी बन गई।





“ओह हो, ज़रा अपनी तरफ़ तो देखो! मम्मी ने आकर कहा, यहाँ से लेकर ज़न्नत तक बस जूस ही जूस....

पापा ने कहा, “कोई बात नहीं प्रिय, वह ऐसे ही सीखती है। अब खामखाँ चिंता मत करो।”

खाना खाने के बाद मेरा मन हुआ कि मैं बर्तन माँजू। पापा ने मुझे सिंक के पास एक कुर्सी पर खड़ा कर दिया। मैंने तश्तरी, गिलास, कटोरी, कप, छुरी, काँटा आदि सब कुछ धो डाला।



मुझे बहुत मज़ा आया। फिर तो मैंने सारे बर्तनों को एक बार और धोने की ठानी।

“ओह हो, ज़रा अपनी तरफ़ तो देखो! मम्मी ने आकर कहा,

अब हमें रसोईघर में जाने के लिए एक पैडल वाली नाव की ज़रूरत पड़ेगी।

ज़रा अपनी जीन्स की तरफ़ भी देख लो, पूरी की पूरी भीग चुकी है।





पापा ने कहा, “कोई बात नहीं प्रिय, वह ऐसे ही सीखती है।

अब खामखाँ चिंता मत करो।”

मैं खुद को मम्मी की तरह खूबसूरत बनाना चाहती थी इसलिए सीधे उनके कमरे में गई। सबसे पहले मैंने लिपिस्टिक को अपने होठों पर लगाया फिर गालों को गुलाबी किया। आँखों के चारों ओर काजल लगाया। फिर मैंने अपनी नाक के नीचे मूँछें बनाई और ठोड़ी पर दाढ़ी बनाई।

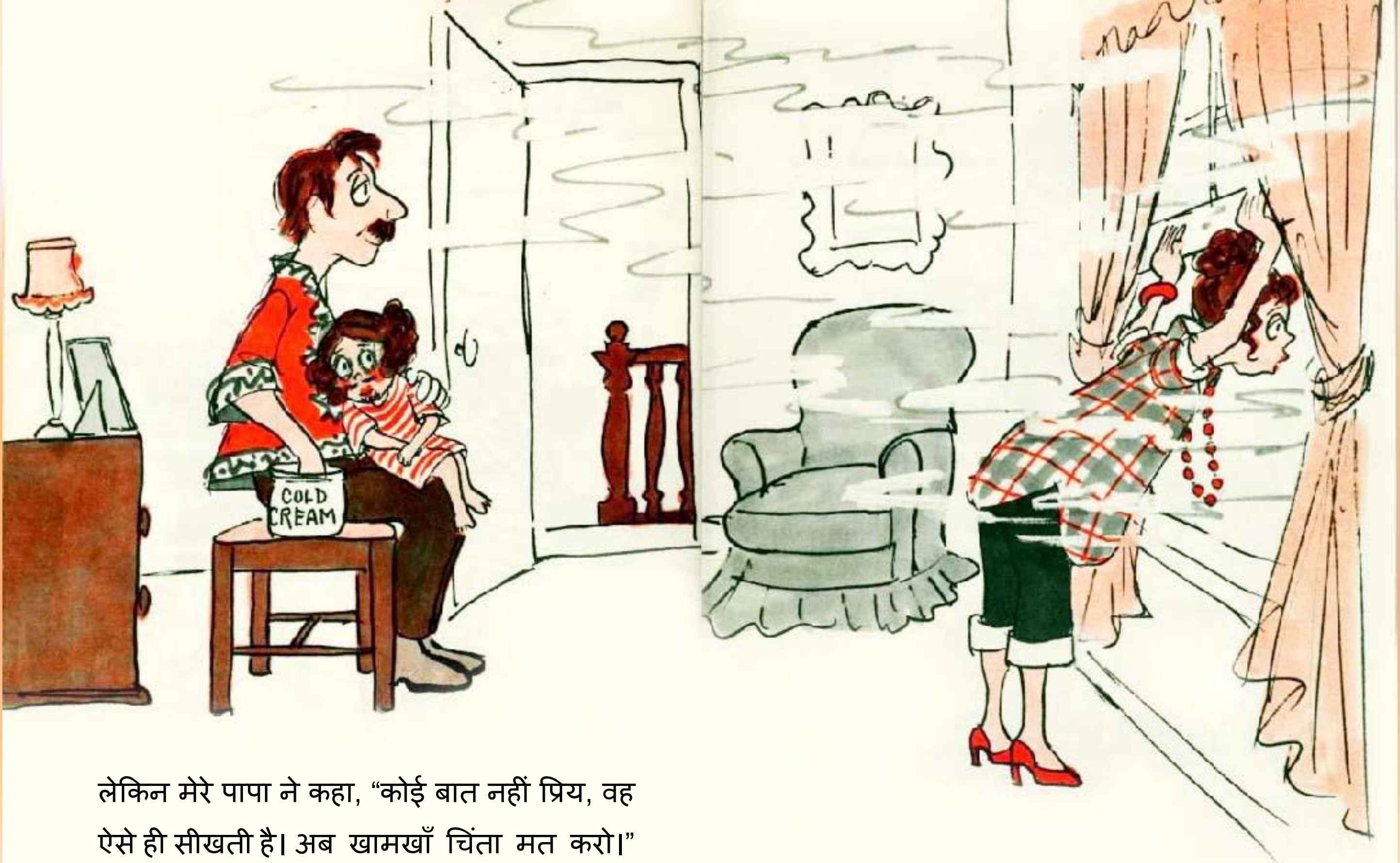


मैंने अपने बालों पर हेयरस्प्रे भी छिड़का। इसकी खुशबू मुझे बहुत ही अच्छी लगी इसलिए मैंने इसे पूरे कमरे में ही छिड़क दिया।

जैसे ही मम्मी ने मुझे देखा, उन्होंने कहा,

“ओह हो, ज़रा अपनी तरफ़ तो देखो! तुमने अपने चेहरे का यह क्या हाल बना रखा है?”





लेकिन मेरे पापा ने कहा, “कोई बात नहीं प्रिय, वह ऐसे ही सीखती है। अब खामखाँ चिंता मत करो।”

एक सुबह...

मैंने सोचा क्यों न मम्मी-पापा को नाश्ता उनके कमरे में ही दे दिया जाए।



मैंने एक ट्रे में तीन कटोरियाँ रखीं और उनमें दूध-दलिया डाला।



फिर ट्रे में तीन कप भी रखे और उनमें जूस डाल दिया।

लग रहा था कि जैसे यह नाश्ता तीन भालुओं के लिए है।



मैं ट्रे को लेकर सीढ़ियों पर चढ़ने लगी। कटोरियाँ और कप आपस में खनखनाते हुए इधर-उधर फिसले जा रहे थे।



“ये रहा आपका नाश्ता आपके बिस्तर पर” मैंने कहा।

पापा ने कहा, “अरे वाह! इतना बड़ा आश्वर्य”

इतने में ही ट्रे से सारा नाश्ता फिसलकर उनकी गोद में जा गिरा।

“ओह हो,” मम्मी ने कहा, “तुमने तो अपने पापा को डुबा ही दिया।”



मैंने रोना शुरू कर दिया।

पापा ने अपनी पोखरनुमा गोद को देखा, फिर मुझे गले से लगा लिया।

“कोई बात नहीं प्रिय, उन्होंने कहा, “तुम ऐसे ही सीखती हो। अब खामखाँ चिंता मत करो।”





कोई बात नहीं मम्मी,





मैं तो ऐसे ही सीखती हूँ।





अब खामखाँ चिंता मत करो।